जम्बूद्वीप विधान
(लघु)

–रचयित्री–

जम्बूद्वीप रचना निर्माण की पावन प्रेरिका

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के
19वें दीक्षा दिवस (श्रावण शु. एकादशी) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

द्वितीय संस्करण	श्रावण शुक्ला एकादशी	मूल्य
1100 प्रतियाँ	24 अगस्त 2007	12/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण-सन् 1974

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

प्रस्तावना

—कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

कोऽहं कीदृग्गुणाः क्वत्यः, किं प्राप्यः किं निमित्तकः।
इत्यूहः प्रत्यहं नोचेदस्थाने हि मतिर्भवेत्।।

हर मनुष्य को प्रातःकाल उठकर सर्वप्रथम यह चिन्तवन करना चाहिए कि 'मैं कौन हूँ?' मेरी क्या अवस्था है? कहाँ से आया हूँ? क्या प्राप्त करना है? और क्या-क्या निमित्त मुझे प्राप्त हैं? वर्तमान में मुझे क्या करना चाहिए जिससे भविष्य में भी सत्य धर्म, सज्जाति एवं उच्च कुल आदि की प्राप्ति हो। ऐसा विचार करनेसे दिन मांगलिक रहता है, अन्यथा बुद्धि हेय कार्यों में चली जाती है।

जैनधर्म में मुख्य रूप से मोक्ष प्राप्ति के दो ही साधन हैं-एक तो अनगार (मुनि) अवस्था और दूसरी सागार (श्रावक) धर्म है। आचार्यों ने लिखा है कि श्रावकों को प्रतिसमय पापकर्मों से निवृत्त रहते हुए पुण्यरूप शुभ कार्यों में प्रवृत्ति करनी चाहिए और यथाशक्ति त्याग करते हुए सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्रपूर्वक मुनिपद अवश्य धारण करना चाहिए।

श्रावकों (गृहस्थों) के लिए मुख्यरूप से प्रतिदिन करने योग्य शुभ कार्यों में 6 कार्य प्रमुख हैं-देवपूजा, गुरुपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान। समयसार, पंचास्तिकाय, मूलाचार आदि उच्चकोटि ग्रंथों के रचयिता जैन धर्म में मंगलस्वरूप आचार्य श्री कुंदकुंद स्वामी ने 'रयणसार' में श्रावकों के लिए पूजा एवं दान को नित्य क्रिया बताते हुए लिखा है-

दाणं पूजा मुक्खं सावय धम्मे ण सावया तेण विणा।।

अर्थात् सुपात्र को चार प्रकार का दान देना एवं श्री देव-शास्त्र-गुरु की पूजा करना श्रावक का मुख्य धर्म है। अगर श्रावक नित्य कर्तव्य समझकर इन दोनों का पालन नहीं करता है तो वह श्रावक नहीं है।

पुनः आचार्य कुन्दकुन्द देव ने पूजन के महत्व एवं उसके फल को 'रयणसार' की गाथा नं. 13 एवं 14 में कहा है-

जिणपूजा मुणिदाणं, करेइ जो देइ सत्तिरूवेण।
सम्माइट्ठी सावय, धम्मी सो होई मोक्खमग्गरओ।।13।।
पूयफलेण तिलोए, सुरपुज्जो हवेइ सुद्धमणो।
दाण फलेण तिलोए, सारसुहं भुंजदे णियदं।।14।।

अर्थात् जो श्रावक अपनी शक्ति के अनुसार प्रतिदिन देव, शास्त्र, गुरु की पूजा

करता है और सुपात्र में चार प्रकार का दान देता है-ऐसे अपने धर्म का पालन करने वाला श्रावक सम्यग्दृष्टी है एवं शीघ्र ही मोक्ष को प्राप्त करने वाला है।

आचार्य देव ने पूजा का फल बताते हुए लिखा है कि जिनेन्द्र देव की शुद्ध मन से श्रद्धापूर्वक पूजा करने से श्रावक देवताओं एवं इन्द्रों से वंद्य तथा तीनों लोकों से पूज्य बन जाता है।

इस प्रकार श्रावकों के लिए नित्य कर्तव्य रूप में पूजा का विशेष महत्व है। पूजा 2 प्रकार की है-एक तो नित्य पूजा और एक नैमित्तिक पूजा। इनके भी अनेक उपप्रभेद हैं। यहाँ तो केवल इतना ही बताना है कि जिनेन्द्र देव की पूजा से अनेक प्रकारेण सुख, वैभव आदि लौकिक ऐश्वर्य तथा परम्परा से मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है।

नैमित्तिक पूजाओं में नंदीश्वर द्वीप, ढाईद्वीप आदि की पूजा हम सभी जानते एवं करते आ रहे हैं लेकिन जिस जम्बूद्वीप नामक प्रथम द्वीप में हम रहते हैं उसकी तरफ अभी तक किसी का ध्यान नहीं गया था। इसी द्वीप में आर्यखण्ड है (जिसमें हम लोग रह रहे हैं) तथा जिसमें तीर्थंकरों के पंचकल्याणक हुए हैं। इसी द्वीप में विदेह क्षेत्र है जहाँ आज भी साक्षात् सीमंधर स्वामी आदि 4 तीर्थंकर विद्यमान हैं तथा जहाँ से अभी भी मोक्षमार्ग खुला हुआ है तथा जम्बूद्वीप में स्थित 78 चैत्यालयों की प्रतिदिन भाव सहित वंदना करने से महान पुण्य एवं सुख की प्राप्ति होगी।

जम्बूद्वीप विधान पूजन को करने के लिए सर्वप्रथम रंगबिरंगे चावलों से या रंगबिरंगे चूर्णों से मंडल बनाना चाहिए। बाद में सकलीकरण विधि करके अभिषेकपूर्वक इस विधान को करना चाहिए।

इस लघु विधान में सर्वप्रथम जम्बूद्वीप विधान की समुच्चय पूजन है इसमें जम्बूद्वीप के अकृत्रिम 78 चैत्यालयों की सामूहिक पूजन करके, अनंतर विशेष रूप से 10 अर्घ्य चढ़ाकर जयमाला दी गई है जिसे प्रत्येक आत्मकल्याणेच्छु भव्यजन प्रतिदिन भी कर सकते हैं।

इस जम्बूद्वीप का विधान अभी तक किसी भी विद्वान के द्वारा निर्मित नहीं हुआ था। बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम शिष्य एवं प्रथम पट्टाधीश आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज की शिष्या पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सन् 1974 में इस विधान को निर्मित करके हमें एक अमूल्य कृति प्रदान की है। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस जम्बूद्वीप विधान के संबंध में स्वयं भी "मेरी स्मृतियाँ" (आत्मकथा) में लिखा है-

"रात्रि में सामायिक के बाद मैं एक जंबूद्वीप की पूजा बनाने बैठ गई। रात्रि के एक-दो बजे तक पूजा बनाकर अठत्तर चैत्यालयों के अठत्तर अर्घ बनाये पुनः सो

गई। प्रातः 4 बजे उठकर सामायिक आदि से निवृत्त होकर पुनः कुछ पूर्णार्घ बनाये और जयमाला बनाई। पूजा पूर्ण कर रही थी कि मोतीचंद ने आकर कहा–

''माताजी! बुद्धू की जगह के पास ही सड़क से लगा हुआ एक छोटा सा खेत दूसरे व्यक्ति का है। उससे मैंने सौदा तय कर लिया है। वह आज ही बैनामा कराने को कह रहा है।

''मैंने प्रसन्नता से स्वीकृति दे दी।''

इसके बाद नौ बजे के समय मैं आहार को महेशचंद जी के यहाँ गई थी, वहीं पर मोतीचंद आहार दे रहे थे। तब श्री सुकुमार चंद जी ने उन्हें बुलाया और कहा–

''मोतीचंद जी! मैंने उस खेत वाले किसान को बयाना में सौ रुपये दे दिये हैं। तुम्हारी जंबूद्वीप रचना के लिए जगह का सौदा पक्का हो गया है।''

सुनकर खुशी हुई, पुनः अगले दिन प्रातः मवाना कचहरी में जाकर मोतीचंद ने बैनामा करा लिया और उसी दिन मैंने निर्णय किया कि–

''कल आषाढ़ शुक्ला तीज, दि. 22-6-74 को सुदर्शन मेरु का शिलान्यास कराकर मैं विहार करूँगी।''

बैनामा कराने के लिए जाते समय सौ. कुसुमलता जैन (ध.प. श्री महेशचंद जैन-डिप्टी साहब) ने बहुत ही सद्भावना से 1001 रुपये लाकर मोतीचंद के हाथ में दे दिये थे, पुनः बाद में बोलीं–

''मैंने शुभ-शकुन के लिए यह तुच्छ राशि इस मंगल प्रसंग में भेंट की।'

उसी दिन छोटा सा पंप्लेट छपवाया गया। मंगल वातावरण में शिलान्यास सम्पन्न हुआ। उस समय नींव की दस फुट गहरी खुदाई में नीचे धरती से पानी आ गया था। वहाँ ही चौकी रखाकर मैं खड़ी हो गई। मोतीचंद ने शिलान्यास विधि सम्पन्न कराई।

इसके बाद आहार करते ही मैं विहार करके टाउन में पहुँची और वहाँ से दिल्ली की तरफ प्रस्थान कर दिया।''

इस प्रकार सन् 1974 में रचित इस लघु विधान का पुनर्मुद्रण हो रहा है। हम सब पूज्य माताजी के बहुत आभारी हैं जिन्होंने इस पूजन विधान को निर्मित करके हम सबको संक्षेप में जैनभूगोल का प्रारूप बतलाया है। श्रद्धालुजन इस मण्डल विधान को करके असीम पुण्य का संचय करें, यही भावना है।

।। नित्यं नमो जगति सर्व जिनालयेभ्यः।।

1-9-2007, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

जम्बूद्वीप के अकृत्रिम जिनालय की व्यवस्था

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

जैनधर्म के करणानुयोग ग्रंथों के अनुसार जम्बूद्वीप एक लाख योजन व्यास वाला थाली के समान गोल एक द्वीप है। इसमें भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत और ऐरावत ये सात क्षेत्र हैं।

भरत क्षेत्र का 526-6/19 योजन अर्थात् 2105263-3/19 मील प्रमाण है। इन क्षेत्रों का विभाग करने वाले हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मि और शिखरी ये छह पर्वत हैं। जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में विदेह क्षेत्र है, विदेह के मध्य में सुदर्शनमेरु पर्वत (सुमेरु पर्वत) है। मेरु की चारों विदिशाओं में चार गजदन्त पर्वत हैं। मेरु के पूर्व और पश्चिम को क्रमशः पूर्व विदेह एवं अपर विदेह कहते हैं। पूर्व विदेह में सीता एवं पश्चिम विदेह में सीतोदा नदी बहती है, जिसके निमित्त से दोनों तरफ दक्षिण और उत्तर ऐसे दो-दो भेद हो जाते हैं।

प्रत्येक विदेह में चार-चार वक्षार और तीन-तीन विभंगा नदियाँ हैं अतः प्रत्येक विदेह में इन सात-सात के निमित्त से आठ-आठ खण्ड हो जाने से बत्तीस खण्ड हो जाते हैं। इन बत्तीसों में प्रत्येक में एक-एक विजयार्ध पर्वत है तथा गंगा, सिंधु व रक्ता, रक्तोदा ऐसी दो-दो नदियाँ बहती हैं। एक विजयार्ध और दो नदियों के निमित्त से प्रत्येक विदेह खण्ड के भरत क्षेत्र के समान छह-छह खण्ड हो जाते हैं।

भरत क्षेत्र के बीच में विजयार्ध पर्वत पूर्व-पश्चिम लम्बा है जो पच्चीस योजन ऊँचा, पचास योजन विस्तृत तथा तीन कटनी वाला है। पहली कटनी पर विद्याधर मनुष्य, दूसरी पर आभियोग्य जाति के देवों के भवन एवं तृतीय कटनी पर आठ देवों के कूट और एक जिनमंदिर हैं। हिमवान् पर्वत के पद्म सरोवर से गंगा-सिंधु नदियाँ निकलकर विजयार्ध पर्वत की गुफा द्वार से बाहर आकर लवण समुद्र में मिल जाती हैं अतः इस भरत क्षेत्र में छह खण्ड हो जाते हैं। ऐसे ही ऐरावत क्षेत्र में विजयार्ध पर्वत तथा रक्ता-रक्तोदा नदी के निमित्त से छह खण्ड हो जाते हैं। इस प्रकार एक भरत, एक ऐरावत और बत्तीस विदेह क्षेत्र इन सबके मिलकर चौंतीस विजयार्ध हैं। ऐसे ही इनमें मध्य का आर्यखण्ड और पाँच म्लेच्छ खण्ड होने से जम्बूद्वीप में कुल 34 आर्यखण्ड और ये ही चौंतीस कर्मभूमि हैं।

मेरु के दक्षिण में देवकुरु और उत्तर में उत्तरकुरु भोगभूमि हैं। उत्तरकुरु में जम्बूवृक्ष एवं देवकुरु में शाल्मलिवृक्ष है।

जम्बूद्वीप के अठत्तर चैत्यालयों की समुच्चय पूजन के बाद 78 चैत्यालयों के पृथक्-पृथक् अर्घ्य हैं उनका स्पष्टीकरण–

सुदर्शन मेरु के भद्रसाल, नन्दन, सौमनस और पांडुक ऐसे चार वन हैं। चारों वनों में चारों ही दिशाओं में एक-एक जिनमंदिर होने से सुमेरु पर्वत के 16 जिनमंदिर हुए। इन 16 चैत्यालयों के अर्घ्य चढ़ाकर पाण्डुक वन में चारों विदिशाओं में जो पांडुक शिला आदि चार शिलाएँ हैं, उनको अर्घ्य चढ़ाया है। अनन्तर हिमवान आदि षट् कुलाचलों पर एक-एक चैत्यालय हैं, उन छह जिनालयों के छह अर्घ्य हैं, गजदंत के चार चैत्यालयों के चार अर्घ्य हैं। पुनः विदेह के सोलह वक्षार के सोलह चैत्यालयों के अर्घ्य हैं और फिर भरत, ऐरावत क्षेत्र के 2 विजयार्ध और बत्तीस विदेह के बत्तीस विजयार्ध ऐसे 34 अर्घ्य हैं। जम्बूवृक्ष की दक्षिण शाखा पर एक जिनमंदिर और शाल्मलिवृक्ष की दक्षिण शाखा पर एक जिनमंदिर है ऐसे दोनों मंदिरों के 2 अर्घ्य हैं। इस प्रकार से 16+6+4+16+34+2=78 अकृत्रिम जिनमंदिरों के अर्घ्य चढ़ाये गये हैं।

अनंतर प्रत्येक जिनमंदिर में 108-108 जिनप्रतिमाएं होने से 78×108=8424 जिनप्रतिमाएँ हुईं, उन सभी को अर्घ्य चढ़ाया गया है। प्रत्येक पर्वतों के जितने कूट हैं उनमें व्यंतर देवों के आवासों में जिनमंदिर हैं। ऐसे ही सरोवरों में जितने कमल हैं, उतने जिनमंदिर हैं। कुंड, वेदी, उपवन, गोपुरद्वार, तोरणद्वार आदि स्थानों पर भी जिनभवन हैं, उन सबको समुच्चय एक अर्घ्य चढ़ाया है।

जम्बूद्वीप के परकोटे में चारों दिशाओं में चार गोपुरद्वार हैं। उनमें भी विजय आदि देवों के भवनों में जिनमंदिर हैं तथा पूर्व दिशा में जम्बूद्वीप का रक्षक अनावृत यक्ष है। उसके भवन में जिन मंदिर हैं, उन सबको अर्घ्य चढ़ाया है। ढाई द्वीप के पाँचों मेरु को, नंदीश्वर द्वीप के 52 चैत्यालयों को, मध्य लोक के चार सौ अट्ठावन अकृत्रिम जिनमंदिर को, त्रिलोक संबंधी आठ करोड़ छप्पन लाख सत्यानवे हजार चार सौ इक्यासी जिनमंदिर इन सबको अर्घ्य चढ़ाया है। इस संख्या में मध्यलोक के अकृत्रिम जिन भवन और भवनवासी तथा कल्पवासी देवों के जिनभवनों की संख्या है। आगे के अर्घ्य में व्यंतर और ज्योतिषी देवों के असंख्य भवनों के असंख्य जिनमंदिर को अर्घ्य चढ़ाया है। पुनः जम्बूद्वीप में और ढाईद्वीप में जो मनुष्य, चक्रवर्ती आदि के द्वारा बनवाये गये जिनमंदिर हैं, उनके अर्घ्य हैं। अनन्तर भरत, ऐरावत और विदेह इन क्षेत्रों में होने वाले भूत, भविष्यत्, वर्तमान कालीन सभी तीर्थंकर को अर्घ्य चढ़ाया है।

अन्त में जयमाला में इन सभी विषयों को संक्षेप में दर्शाया गया है। इस प्रकार से यह विधान की पूजन जैन भूगोल को जानने की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सन् 1965 में मध्यलोक के तेरहद्वीपों की अकृत्रिम रचना को ध्यान में देखा। पुनः उसे धरती पर साकार करने की इच्छा हुई तब प्रथम द्वीप के रूप में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण हस्तिनापुर में करने का निर्णय लिया गया। उसी संदर्भ में सन् 1974 में प्रथम बार इस विधान की रचना हुई है। यह लघु विधान समस्त भक्तों के लिए मंगलमयी होवे, यही भगवान जिनेन्द्र से प्रार्थना है।

विधान की रचयित्री राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

जन्मस्थान : टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि : आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा)
वि. सं. 1991 (22 अक्टूबर सन् 1934)
गृहस्थ का नाम : कु. मैना
माता-पिता : श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत एवं गृहत्याग : ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।
क्षुल्लिका दीक्षा : चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में
आर्यिका दीक्षा : वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्यश्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व : अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा : हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा।

महोत्सव प्रेरणा : पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ।

शैक्षणिक प्रेरणा : 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा : जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है-कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिरत्रासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, तेरहद्वीप जिनालय तथा नवग्रहशांति जिनमंदिर।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी, मिनी ट्रेन, झूलें आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिनभर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित भगवान ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य तीर्थों के दर्शन हेतु कम से कम एक बार अवश्य पधारें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी 19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली

जम्बूद्वीप विधान

जम्बूद्वीप भक्ति

(उपजाति छंद)

सुदर्शनाद्रिं प्रणिपत्य मूर्ध्ना, तत्रस्थितन् षोडशचैत्यगेहान्।
तेषु स्थिताश्च प्रतिमा जिनानां, वंदे विशुद्ध्या शिवसौख्यसिद्ध्यै।।1।।

चतुःप्रमा ये गजदंतशैलाः, तेषु त्रिलोकाधिपमंदिराणि।
तत्राप्तरूपाणि नमोऽस्तु तेभ्यः, स्वात्मोत्थसौख्यं मम शीघ्रमस्तु।।2।।

जिनालयाः षट्कुलपर्वतेषु, ह्यकृत्रिमा रत्नमयाः विरेजुः।
जैनेन्द्रबिम्बानि विभांति तेषु, नमामि भूत्यै किल तानि मोदात्।।3।।

विदेहदेशस्थितषोडशेषु, वक्षारशैलेषु जिनालयाः स्युः।
तत्र स्थितास्ताः प्रतिमाः प्रवंदे, भवाग्निशान्त्यै शिरसा त्रिसंध्यं।।4।।
ये प्राग्विदेहेषु सुपश्चिमेषु, द्विःषोडशप्राकृतिकाः सुदेशाः।
सर्वेषु मध्ये विजयार्ध-शैलाः, तत्रस्थ -जैनेन्द्रगृहाणि वंदे।।5।।

ऐरावते यौ भरतेऽपि कांतौ, रूप्याचलौद्वौ च तयोः जिनानां।
निकेतने तत्र जिनेश्वरार्चाः, मनः प्रसत्त्यै किल ताः प्रणौमि।।6।।

जम्बूद्रुमे शाल्मलि-शाखिनि द्वौ, चैत्यालयौ तौ प्रणमामि नित्यं।
तत्रस्थचैत्यानि भवांतकानां, संस्तौमि भक्त्या भवदुःखशान्त्यै।।7।।

(आर्या छन्द)

मेरौ षोडशशैले, गजदंते ये चतुःप्रमाः जिननिलयाः।
कुलशैले षड् मान्या, विदेहजे वक्षारगिरिषु ते षोडश।।8।।

रूप्याद्रिचतुस्त्रिंशत्, तेषु गृहाः जम्बूद्रौ शाल्मलिवृक्षे।
एतान् सर्वान् मान्यान्, अष्टासप्तति-जिनालयान् प्रणमामि।।9।।

(तोटक छंद)

मुनिवंदितपादसरोजयुगं, सुरनायकनागनरेन्द्रनुतं।
अकृतं भुवनत्रयजैनगृहं, प्रणमामि मनःशुद्ध्यै सततं।।10।।

विविधैः शुभमंगलवस्तुयुतैः, घटमंगलतोरणधूपघटैः।
शुशुभे जिनसद्म सदानुपमं, प्रणमामि मनःशुद्ध्यै सततं।।11।।

(अनुष्टुप्)

चतुर्विंशतितीर्थेशा, भारते वृषभादयः।
ऐरावतेऽपि ये जातास्तेभ्यो नित्यं नमोऽस्तु मे।।12।।

सीमंधरादिचत्वारो, जिनेन्द्रास्तान् नमाम्यहं।
वर्तमानान् विदेहषु, केवलिनो मुनयश्च तान्।।13।।

जम्बूद्वीपेऽत्र यावन्तो-ऽर्हद्गणभृद्-यतीश्वराः।
सिद्धाः सिद्ध्यंति सेत्स्यंति, तान् तत्क्षेत्राणि च स्तुवे।।14।।

पंचकल्याणमेदिन्यः, सातिशयस्थलानि च।
वंदे कृताकृतांश्चापि, जिनचैत्यजिनालयान्।।15।।

(मंदाक्रांता छंद)

अंतातीता जिनवरगृहा धातकी - पुष्करार्धे-।
ष्विष्वाकारे सुरुचकगिरौ मानुषांके प्रभूताः।।
पूज्या ये कुंडलगिरिवरे द्वीपनंदीश्वरे च।
तत्रस्थान् तान् प्रतिदिनमहं जैनगेहान् प्रवंदे।।16।।

ये त्रैलोक्ये भवनभुवने व्यंतरे स्वर्गलोके।
ज्योतिर्लोके जिनवरगृहाः संति विभ्राजमानाः।।
एते सर्वे भुवनमहिताः साधुवृन्दैः सुवंद्याः।
दद्युर्मह्यं जिनसुगुणसंपत् सदा तांश्च वंदे।।17।।

(पृथ्वी छंद)

नमोऽस्तु जिनमूर्तये सकलतापविच्छित्तये।
नमोऽस्तु जिनमूर्तये सकलदोषसंशुद्धये।।
नमोऽस्तु जिनमूर्तये सकलसौख्य-संसिद्धये।
पुनीहि जिनदेव! मां भवभयात् हि रक्षां कुरु।।18।।

नमोऽस्तु जिनसद्मने त्रितयलोकसपंद्भृते।
नमोऽस्तु परमात्मने सकललोकचूडामणे।।
नमोऽस्तु जिनमूर्तये सकलदोषविच्छित्तये।
पुनीहि मम रागमोह-सहितं मनोऽज्ञानवत्।।19।।

(अनुष्टुप् छंद)

जम्बूद्वीपस्तुतिर्भक्त्या, क्रियते नियतं मुदा।
भूयात् सा मेऽचिरायार्ह-ज्ज्ञानमत्यै श्रियै ध्रुवं।।20।।

(अंचलिका)

इच्छामि भंते! जम्बूद्वीवभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्स आलोचेउं, इमम्हि पढमे जम्बूद्वीवम्हि मंदरसेले गजदंत-वक्खार-रूप्प-कुलपव्वदेसु जम्बूसालमलिरुक्खेसु दो भरहेरावएसु बत्तीसविदेहेसु चउतीसकम्मभूमीसु अज्जखंडेसु किट्टिमाकिट्टि-माणं सव्वजिणायदणाणं, तित्थयर-सामण्ण-केवली-गणहर-सुदकेवली-विविधरिद्धि-जुत्त-रिसि-मुणि-जइ-अणगाराणं संततविहरमाण-सीमंधरादि-चउजिणिंदाणं पंचकल्लाणकभूमि-अइसयखेत्ताणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

अथ विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जम्बूद्वीप भक्ति

(हिन्दी पद्यानुवाद-नरेन्द्र छंद)

मेरु सुदर्शन गिरि को मस्तक नत होकर के प्रणमन कर।
उस पर स्थित सोलह जिनगृह सब गृह में प्रतिमा मनहर।।
उन सब जिनगृह जिनप्रतिमा को त्रय शुद्धी से वंदूं मैं।
भक्तिभाव से नितप्रति प्रणमूँ शिवसुख सिद्धी हेतू मैं।।1।।

विदिशाओं में गजदंताचल चार कहे हैं सुन्दरतम।
उनमें त्रिभुवन पति जिनवर के मंदिर शोभें अति उत्तम।।
उन मंदिर में आप्तप्रभू की प्रतिमाएँ शाश्वत शोभें।
नमोऽस्तु उन सबको नित मेरा स्वात्मजन्य सुख मम होवे।।2।।

षट्कुल पर्वत पर चैत्यालय रत्नमयी शोभें शाश्वत।
उन गृह में प्रतिमाएँ इक सौ आठ प्रणाम सभी में नित।।
अकृत्रिम जिनबिम्ब मनोहर उनको मुद से नमूँ सदा।
शिव सुख विभव प्राप्ति के हेतु षट् जिन मंदिर नमूँ सदा।।3।।

पूर्व और पश्चिम विदेह के शुभ वक्षार गिरी षोडश।
उन पर षोडश जिन मंदिर हैं अकृत्रिम रत्नों के शुभ।।
उनमें राजित जिनवर प्रतिमा को वंदूँ त्रयकाल मुदा।
भव भय अग्नि शांत करने को शिर नत हो मैं नमूँ सदा।।4।।

पूर्वापर बत्तिस विदेह में बत्तिस रजताचल पर्वत।
उन पर बत्तिस जिन चैत्यालय अकृत्रिम शोभें संतत।।
उनमें राजित जिनवर प्रतिमा भक्ति भाव से वंदूँ मैं।
भव संताप नाश मम होवे त्रिकरणशुचि से अर्चूं मैं।।5।।

भरतक्षेत्र अरु ऐरावत में दो विजयारध पर्वत हैं।
उन पर जिनमंदिर दो राजें भावभक्ति से वंदूँ मैं।।
उन मंदिर में जिनवर प्रतिमा वंदन करूँ सदा शुचि से।
मनप्रसन्नता हेतु नमूँ मैं भव दुख नाश करूँ झट से।।6।।

जम्बूशाल्मलि दो वृक्षों पर दो जिन चैत्यालय शाश्वत।
उनमें जिनवर की प्रतिमाएँ रत्नमयी शोभें नित प्रति।।
भवदुःख अंतक जिनवर के प्रतिबिम्ब उन्हें मैं नमूँ सदा।
भवदुःख शांति हेतु भक्ति से सतत संस्तवन करूँ मुदा।।7।।

मेरु सुदर्शन के षोडश जिनगृह गजदंत गिरी के चार।
कुल गिरी के षट् कहे विदेह क्षेत्र के षोडशगिरि वक्षार।।8।।

रजताचल के चौंतिस जिनगृह जम्बू शाल्मलि के दो जान।
ये सब अट्ठत्तर चैत्यालय उनको नमूँ सदा सुखदान।।9।।

मुनिगण वंदित पाद सरोरुह सुरपति नाग नरेन्द्र नुतं।
त्रिभुवन जिनगृह शाश्वत जितने मनःविशुद्धि हेतु प्रणमन।।10।।

मंगल द्रव्य विविध तोरण घट धूप कुम्भ मंगल शोभें।
मणिमाला से अनुपम जिनगृह मनःशुद्धिकृत प्रणमूँ मैं।।11।।

भरतक्षेत्र के वृषभ आदि चौबिस तीर्थंकर को वंदन।
ऐरावत में भी चौबीस ही उनको मेरा नित्य नमन।।12।।

विदेहक्षेत्र में सीमंधर युगमंधर बाहु सुबाहु जिन।
वर्तमान केवलि श्रुतकेवलि ऋषिगण आदिक उन्हें नमन।।13।।

जम्बूद्वीप में जितने भी तीर्थंकर गणधर औ यतिगण।
सिद्ध हुये होते होंगे उनको उन क्षेत्रों को भी नमन।।14।।

पंचकल्याणक भूमि तथा अतिशययुत क्षेत्र सभी प्रणमूँ।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनप्रतिमा जिनगृह को भी मैं नित्य नमूँ।।15।।

धातकि पुष्करार्ध द्वीपों में इष्वाकार गिरी ऊपर।
मनुजोत्तर नगपर जिनगृह हैं, नंदीश्वर वर द्वीप रुचिर।।
रुचकगिरी कुंडल पर्वत पर जितने जिनमंदिर राजें।
उन मंदिर के जिनबिम्बों को वंदूँ पाप तिमिर भाजें।।16।।

त्रिभुवन में जो भवनवासि व्यंतर ज्योतिषगृह स्वर्गों में।
श्री जिनवरगृह शोभित होते उनमें प्रतिमा अगणित हैं।।

ये सब त्रिभुवन पूज्य जिनालय साधुगणों से वंदित हैं।
वंदूँ सबको सदा मुझे वे जिनगुण संपत्ती देवें।।17।।

नमोऽस्तु जिन प्रतिमा को मेरा सकल ताप विच्छेद करो।
नमोऽस्तु जिन प्रतिमा को मेरा सकल दोष से शुद्ध करो।।
नमोऽस्तु जिन प्रतिमा को मेरा सकल सौख्य संसिद्धि करो।
हे जिनदेव! पवित्र करो मम भव से रक्षा झटिति करो।।18।।

नमोऽस्तु अकृत्रिम जिनमंदिर तीन लोक संपद्भर्ता।
नमोऽस्तु परमात्मन्! परमेष्ठिन्! सकललोकचूड़ामणिनाथ।।
नमोऽस्तु जिन प्रतिमा को मेरा सकल दोष विच्छेद करो।
राग मोह युत मम अज्ञानवान् मन झटिति पवित्र करो।।19।।

जम्बूद्वीप जिनालय संस्तुति, भक्ति से मैं करूँ मुदा।
अर्हत् ''ज्ञानमती'' श्री मुझको होवे झटिति कर्म भिदा।।20।।

अंचलिका –

भगवन्! जम्बूद्वीप भक्ति का कायोत्सर्ग किया उसके।
आलोचन करने की इच्छा करना चाहूँ मैं रुचि से।।
जम्बूद्वीप प्रथम यह इसमें मंदरगिरि गजदंताचल।
रूपाचल वक्षार कुलाचल जम्बू तरु शाल्मलि तरुवर।।1।।

इनमें शाश्वत जिनगृह विदेह बत्तिस दो भरतैरावत।
चौंतिस कर्मभूमि के आर्य खंड में जिनगृह नर सुर कृत।।
तीर्थंकर केवलि गणधर श्रुतकेवलि विविध ऋद्धि के ईश।
ऋषि मुनि यति अनगार तथा सीमंधर आदि चार तीर्थेश।।2।।

कर्मभूमि में पंचकल्याणक क्षेत्र व अतिशय क्षेत्र बहुत।
इन सबको मैं अर्चूं पूजूँ वंदन करूँ नमूँ नित प्रति।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय होवे बोधि लाभ होवे।
सुगति गमन हो समाधिमरणं मम जिनगुणसंपति होवे।।3।।

अथ विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय मण्डलस्योपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जम्बूद्वीप पूजा

(समुच्चय)

पूजा नं.-1

-अथ स्थापना-दोहा-

मेरु सुदर्शन गिरि महा, शोभे जिसके मध्य।
प्रथम सु जम्बूद्वीप है, सब द्वीपों के मध्य।।1।।

अट्ठत्तर जिनगेह हैं, अकृत्रिम इस माँहि।
नितप्रति पूजूँ भाव से, मुद से शीश नमाय।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थित सर्वजिनबिम्बसमूह। अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थित सर्वजिनबिम्बसमूह।अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थित सर्वजिनबिम्बसमूह।अत्र मम सन्निहितो भव भव बषट् (स्थापना)

अथ अष्टक (चौबोल छंद)

क्षीरोदधि के निर्मल जल से, झारी भर ले आया हूँ।
जन्म जरा मृति नाश हेतु, त्रयधारा देने आया हूँ।।
जम्बूद्वीप जिनालय शोभें, शाश्वत अठसत्तर परिमाण।
उनमें राजित सब प्रतिमा को, पूजूँ नितप्रति करूँ प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थित सर्वजिनप्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चंदन कर्पूर सुमिश्रित, सुरभित लाया घिस करके।
भक्ति से चर्चन करता हूँ, भव आतप मम शीघ्र नशे।।
जम्बूद्वीप जिनालय शोभें, शाश्वत अठसत्तर परिमाण।
उनमें राजित सब प्रतिमा को, पूजूँ नित्तप्रति करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थित सर्वजिनप्रतिमाभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत धोय अखंडित, पुंज चढ़ाऊँ भक्ति से।
अक्षय पद को प्राप्त करूँ मैं, यही चाह है बहु दिन से।।
जम्बूद्वीप जिनालय शोभें, शाश्वत अठसत्तर परिमाण।
उनमें राजित सब प्रतिमा को, पूजूँ नित्तप्रति करूँ प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थित सर्वजिनप्रतिमाभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुम सुगंधित जुही चमेली, कमल केतकी ले मनहर।
भव संकट के नाश हेतु मैं, पुष्प चढ़ाऊँ मन शुचिकर।।
जम्बूद्वीप जिनालय शोभें, शाश्वत अठसत्तर परिमाण।
उनमें राजित सब प्रतिमा को, पूजूँ नित्तप्रति करूँ प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थित सर्वजिनप्रतिमाभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक फेनी पायस आदिक, उत्तम नेवज लाया हूँ।
क्षुधा पिशाची नाश हेतु, तव अर्पण करने आया हूँ।।
जम्बूद्वीप जिनालय शोभें, शाश्वत अठसत्तर परिमाण।
उनमें राजित सब प्रतिमा को, पूजूँ नित्तप्रति करूँ प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थित सर्वजिनप्रतिमाभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णपात्र में घृत भर करके, दीप जला कर लाया हूँ।
मोह तिमिर के नाश हेतु, यह जगमग ज्योति जलाया हूँ।।
जम्बूद्वीप जिनालय शोभें, शाश्वत अठसत्तर परिमाण।
उनमें राजित सब प्रतिमा को, पूजूँ नित्तप्रति करूँ प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थित सर्वजिनप्रतिमाभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु चंदन से मिश्रित, धूप अग्नि में खे करके।
अष्टकर्म को शीघ्र जलाऊँ, विधिवत् प्रभु पूजन करके।।

जम्बूद्वीप जिनालय शोभें, शाश्वत अठसत्तर परिमाण।
उनमें राजित सब प्रतिमा को, पूजूँ नित्तप्रति करूँ प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थित सर्वजिनप्रतिमाभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल दाडिम सेव आम, अंगूर फलों के गुच्छे ले।
उत्तम पद फल पाने हेतू, अर्पण करूँ सरस फल ले।।
जम्बूद्वीप जिनालय शोभें, शाश्वत अठसत्तर परिमाण।
उनमें राजित सब प्रतिमा को, पूजूँ नित्तप्रति करूँ प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थित सर्वजिनप्रतिमाभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्पों से, नेवज दीप धूप फल से।
अर्घ्य बनाकर सदा चढ़ाऊँ, प्रभु गुण गाऊँ भक्ति से।।
जम्बूद्वीप जिनालय शोभें, शाश्वत अठसत्तर परिमाण।
उनमें राजित सब प्रतिमा को, पूजूँ नित्तप्रति करूँ प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थित सर्वजिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

विघ्न कर्म दुखप्रद सदा, उनकी शांति हेतु।
कनक झारि से धार दूँ, विधिवत् भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्प सुगंधित ले सदा, तुष्टि पुष्टि दातार।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करूँ, ईप्सित फल दातार।।11।।

पुष्पांजलिः।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– **प्रथम सुदर्शन मेरु के, सोलह श्री जिनगेह।**
उनमें प्रतिमा को जजूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शनमेरु संबंधि षोडशजिनालयस्थित सर्वजिन-प्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् कुल पर्वत के जजूँ, षट् जिनगृह धर प्रीति।
उनमें जिन प्रतिमा अकृत, पूजूँ उन्हें सु प्रीति।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ षट्कुलाचल संबंधि षट्जिनालयस्थित सर्वजिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजदन्ताचल चार के, चार जिनालय जान।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, होवे भव दुःख हान।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ चतुर्गजदन्ताचल संबंधि चतुर्जिनालयस्थित सर्वजिन-प्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह गिरि वक्षार हैं, कहे विदेहनि बीच।
उन पर सोलह जिन भवन, उनको अर्चूं नित्य।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ षोडश वक्षारपर्वतसंबंधि षोडशजिनालयस्थ सर्वजिन-प्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरतैरावत क्षेत्र के, दो विजयारध नित्य।
बत्तिस देश विदेह के, विजयारध बत्तीस।।
इन चौंतिस विजयार्ध के, जिनमंदिर चौंतीस।
उनमें प्रतिमा सब जजूँ, अर्घ्य चढ़ा धर प्रीत।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ चतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतसंबंधि चतुस्त्रिंशत् जिनालयस्थ सर्वजिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूतरु शाल्मलि तरू, इनके दो जिनगेह।
उनमें प्रतिमा को जजूँ, त्रिकरण शुद्धि समेत।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थजम्बूशाल्मलिद्वयवृक्षसंबंधिद्वयजिनालयस्थ सर्वजिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौबोल छन्द–

मेरु, कुलाचल, गजदंताचल, गिरिवक्षार रजतपर्वत।
जंबू शाल्मलि तरु सबके हैं, ये अट्ठत्तर जिनगृह नित्त।।
इक-इक जिनगृह में जिनप्रतिमा इकसौ आठ प्रमाण कहीं।
सब गृह में अठसहस चारशत, चौबिस प्रतिमा जजूँ सही।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्ट सप्तति जिनालयस्थ चतुर्विंशत्यधिकाष्टसहस्र-चतुःशतक-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत, नदी, कूट, सरवर में, कमल गृहों के कुंडों में।
वेदी, उपवन अरु गोपुर, तोरणद्वारों के शिखरों में।।
अकृत्रिम जिनप्रतिमा अगणित कहीं आर्ष में रत्नों की।
उन सबको नित अर्घ्य चढ़ाकर, वंदन पूजन करूँ अभी।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पर्वत नदीकूट सरोवर कमलगृह कुंड वेदी वनखंड गोपुर तोरणद्वारादि स्थानेषु अगणित जिनबिम्बानि संति तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु सुदर्शन के पांडुक, वन की चारों विदिशाओं में।
शिला चार शुभ पांडुक आदि, जिन अभिषेक हेतु हैं वे।।
पूज्य पवित्र शिलायें सुन्दर, उनको अर्चूं भक्ति से।
नितप्रति अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ, छूट जाऊँ भव-भव दुःख से।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शन मेरु संबंधि पांडुकवन स्थित चतुर्विदिशागत पूज्यपवित्र जिनाभिषेक हेतुक पांडुकादिचतुः शिलाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जंबूद्वीप सुरक्षक व्यंतर-देव अनावृत यक्ष कहा।
निज परिवार सहित पूरब दिक्, में रहता है मुदित महा।।
उसके गृह में जिनमंदिर हैं, उनमें प्रतिमा नमन करूँ।
जल चंदन अक्षत आदिक ले, अर्घ्य चढ़ा कर पूज करूँ।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ रक्षकअनावृतयक्षस्य गृहचैत्यालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य - ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्ततिजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः।

(108 सुगंधित पुष्पों से या लवंग से या पीले तंदुल से)

जयमाला

-दोहा-

अट्ठत्तर जिनगेह के, जितने शाश्वत बिम्ब।
उन सबको वंदन करूँ, हरूँ जगत के फंद।।1।।

-चौबोल छंद-

मेरु सुदर्शन के षोडश जिनगृह गजदन्त गिरी के चार।
कुलगिरि के षट् कहे विदेह क्षेत्र के षोडश गिरि वक्षार।।

रजताचल के चौंतिस जिनगृह जम्बूशाल्मलि के दो जान
ये सब अट्ठत्तर चैत्यालय उनको नमूँ सदा सुखदान।।2।।

इक-इक गृह में इकसौ आठ हैं जिनवर प्रतिमा शोभें नित्य।
अट्ठत्तर जिनगृह में प्रतिमा आठ सहस चउशत चौबीस।।
ये सब पाँच शतक धनु ऊँची पद्मासन राजें सुन्दर।
भव्यजनों को अतिशय प्रिय हैं वीतराग छवि दृग मनहर।।3।।

नमोस्तु जिन प्रतिमा को मेरा सकल ताप विच्छेद करो।
नमोस्तु जिन प्रतिमा को मेरा सकल दोष से शुद्ध करो।।
नमोस्तु जिन प्रतिमा को मेरा सकल सौख्य संसिद्धकरो।
हे जिन देव पवित्र करो मम भव से रक्षा झटिति करो।।4।।

-छन्द घत्ता-

जय जय जिन मंदिर, मंगल मंदिर, जय जिन प्रतिमा नमन करूँ।
नित प्रति तुम ध्याऊँ, पूज रचाऊँ, पाप नशाऊँ सौख्य भरूँ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भवि जम्बूद्वीप के, सब शाश्वत जिनगेह।
'ज्ञानमती' पूजें सतत, सो शाश्वत पद लेय।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

पूजा नं.-2

–दोहा–

मध्यलोक के मध्य में, प्रथम सु जम्बूद्वीप।
अठसत्तर जिनभवन हैं, उनमें शाश्वत सिद्ध।।1।।
उनमें जिन प्रतिमा अमित, नहीं गमन की शक्ति।
आह्वानन विधि मैं करूँ, पूजूँ यहीं सु भक्ति।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह। अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–कुसुमलता छन्द–

कर्म पंक प्रक्षालन हेतू जलधारा से पूज करूँ।
जम्बूद्वीप जिनालय शाश्वत, जिन प्रतिमा को नमन करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव आताप निवारण हेतु मैं चंदन से चर्च करूँ।
जम्बूद्वीप जिनालय शाश्वत, जिन प्रतिमा को नमन करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद के प्राप्त करन को, सित अक्षत से पुंज धरूँ।
जम्बूद्वीप जिनालय शाश्वत, जिन प्रतिमा को नमन करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भव दुःख के नाश करन को, पुष्प सुगंधित भेंट करूँ।
जम्बूद्वीप जिनालय शाश्वत, जिन प्रतिमा को नमन करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधावेदनी नाश करन को, उत्तम नेवज भेंट करूँ।
जम्बूद्वीप जिनालय शाश्वत, जिन प्रतिमा को नमन करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नथाल में दीप सजाकर, जगमग ज्योति ज्वलित करूँ।
जम्बूद्वीप जिनालय शाश्वत, जिन प्रतिमा को नमन करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चूर्णों से मिश्रित, धूप अग्नि में क्षेप करूँ।
जम्बूद्वीप जिनालय शाश्वत, जिन प्रतिमा को नमन करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेब आम अंगूर श्रीफल, उत्तम फल ले भेंट धरूँ।
जम्बूद्वीप जिनालय शाश्वत, जिन प्रतिमा को नमन करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत आदिक ले, अर्घ्य चढ़ा कर पूज करूँ।
जम्बूद्वीप जिनालय शाश्वत, जिन प्रतिमा को नमन करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ अष्टसप्तति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

विघ्न कर्म दुःखप्रद सदा, उनकी शांति हेतु।
कनक झारि से धार दूँ, विधिवत् भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्प सुगंधित ले सदा, तुष्टि पुष्टि दातार।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, ईप्सित फल दातार।।11।।

पुष्पांजलिः।

अठत्तर जिनालय के प्रत्येक अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद–

मेरु सुदर्शन के भूपर है, भद्रशाल वन उत्तम।
उसके पूर्व दिशा में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि भद्रसालवनस्थित पूर्वदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु सुदर्शन के भूपर है, भद्रशाल वन उत्तम।
उसके दक्षिण दिशा में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।2।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि भद्रसालवनस्थित दक्षिणदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु सुदर्शन के भूपर है, भद्रशाल वन उत्तम।
उसके पश्चिम दिक् में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।3।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि भद्रसालवनस्थित पश्चिमदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु सुदर्शन के भूपर है, भद्रशाल वन उत्तम।
उसके उत्तर दिक् में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि भद्रसालवनस्थित उत्तरदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचशतक योजन ऊपर हैं, नन्दन वन सुन्दर तम।
उसके पूर्व दिशा में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।5।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि नन्दनवनस्थित पूर्वदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचशतक योजन ऊपर हैं, नन्दन वन सुन्दर तम।
उसके दक्षिण दिक् में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।6।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि नन्दनवनस्थित दक्षिणदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचशतक योजन ऊपर हैं, नन्दन वन सुन्दर तम।
उसके पश्चिम दिक् में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।7।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि नन्दनवनस्थित पश्चिमदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचशतक योजन ऊपर हैं, नन्दन वन सुन्दर तम।
उसके उत्तर दिक् में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।8।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि नन्दनवनस्थित उत्तरदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बासठ सहस पाँच सौ योजन, ऊपर सौमनसं वन।
उसके पूर्व दिशा में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।

जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।9।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि सौमनसवनस्थित पूर्वदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बासठ सहस पाँच सौ योजन, ऊपर सौमनसं वन।
उसके दक्षिण दिक् में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।10।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि सौमनसवनस्थित दक्षिणदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बासठ सहस पाँच सौ योजन, ऊपर सौमनसं वन।
उसके पश्चिम दिक् में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।11।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि सौमनसवनस्थित पश्चिमदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बासठ सहस पाँच सौ योजन, ऊपर सौमनसं वन।
उसके उत्तर दिक् में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।12।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि सौमनसवनस्थित उत्तरदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तीस हजार योजन ऊपर, पांडुकवन है उत्तम।
उसके पूर्व दिशा में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।13।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि पांडुकवनस्थित पूर्वदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तीस हजार योजन ऊपर, पांडुकवन है उत्तम।
उसके दक्षिण दिश में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।14।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि पांडुकवनस्थित दक्षिणदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तीस हजार योजन ऊपर, पांडुकवन है उत्तम।
उसके पश्चिम दिक् में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।5।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि पांडुकवनस्थित पश्चिमदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तीस हजार योजन ऊपर, पांडुकवन है उत्तम।
उसके उत्तर दिक् में शोभें, जिनमंदिर सर्वोत्तम।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।16।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि पांडुकवनस्थित उत्तरदिक् चैत्यालयस्थ सर्वजिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा– **प्रथम सुदर्शन मेरु के, सोलह श्री जिनगह।**
उनमें प्रतिमा को जजूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधि षोडश जिनालयस्थित सर्वजिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

मेरु सुदर्शन के पांडुक वन की चारों विदिशाओं में।
शिला चार-चार शुभ पांडुक आदि जिनअभिषेक हेतु हैं वे।।
पूज्य पवित्र शिलायें सुन्दर उनको अर्चूं भक्ति से।
नितप्रति अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ छूट जाऊँ भव-भव दुःख से।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थित चतुर्विदिशागत पूज्य पवित्र जिनाभिषेक हेतु पांडुकादि चतुःशिलाभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

छह कुलाचल के छह अर्घ्य

हिमवन् पर्वत के ऊपर हैं, ग्यारह कूट सुशोभित।
पूर्व दिशा में सिद्धकूट हैं, जिनमंदिर से भूषित।।
जल चंदन अक्षत आदिक ले, अर्घ्य चढ़ाऊँ रूचि से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।17।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थहिमवन्पर्वतसंबंधिचैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल महा हिमवन् के ऊपर, आठ कूट हैं सुन्दर।
पूर्वदिशा में सिद्धकूट पर, जिनमंदिर है मनहर।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।18।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहाहिमवन्पर्वतसंबंधिसिद्धकूटचैत्यालयस्थ सर्वजिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निषधाचल है नव कूटों से, शोभित शाश्वत मनहर।
पूर्वदिशा में सिद्धकूट है, उस पर श्री जिनमंदिर।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।19।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थनिषधपर्वतसंबंधिसिद्धकूटचैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीलकुलाचल नव कूटों से, शोभित शाश्वत मनहर।
पूर्वदिशा में सिद्धकूट है, उसपे श्री जिनमंदिर।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थनीलपर्वतसंबंधिसिद्धकूटचैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूक्मि पर्वत के ऊपर हैं, आठ कूट मनहारी।
पूर्व दिशा के सिद्धकूट पर, जिनमंदिर सुखकारी।।

जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।21।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरूक्मिपर्वतसंबंधिसिद्धकूटचैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरी पर्वत के ऊपर हैं, ग्यारह कूट सुशोभित।
पूर्व दिशा में सिद्धकूट है, जिनमंदिर से भूषित।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, अर्घ चढ़ाऊँ मुद से।
शाश्वत जिनमंदिर के जिनवर, बिंब जजूँ भक्ति से।।22।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थशिखरीपर्वतसंबंधिसिद्धकूटचैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य–दोहा– **षट्कुल पर्वत के जजूँ, षट् जिनगृह धर प्रीति।**
उनमें जिनप्रतिमा अकृत, पूजूँ उन्हें सु प्रीति।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ षट्कुलाचलसंबंधिषट्जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजदन्त के चार अर्घ्य

मेरू की ईशान दिशा में, माल्यवंत गजदन्ताचल।
नीलमणि के इस पर्वत पर, कूट कहे हैं नव निर्मल।।
मेरु निकट श्रीसिद्धकूट के, जिनमंदिर को नमन करूँ।
जल चंदन अक्षत आदिक ले, अर्घ्य चढ़ाकर यजन करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं मेरुपर्वतस्य ईशानदिशि माल्यवंत-गजदन्त-पर्वतस्थित सिद्धकूट जिनमंदिर संबंधि जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू की आग्नेयदिशा में, महा सौमनस है गजदन्त।
रजत वर्णमय इस पर्वत पर, कूट कहे हैं उत्तम सात।।
मेरु निकट श्रीसिद्धकूट, के जिनमंदिर को नमन करूँ।
जल चंदन अक्षत आदिक ले, अर्घ्य चढ़ाकर यजन करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं मेरुपर्वतस्याग्नेयदिशि महासौमनस-गजदन्त-पर्वतस्थित सिद्धकूट जिनमंदिर संबंधि सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू की नैऋत्यदिशा में, विद्युत्प्रभ गजदन्त महान्।
वर्ण तपाये स्वर्णसदृश है, उस पर शुभ नवकूट महान्।।
मेरु निकट श्रीसिद्धकूट, के जिनमंदिर को नमन करूँ।
जल चंदन अक्षत आदिक ले, अर्घ्य चढ़ाकर यजन करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं मेरुपर्वतस्य नैऋत्यदिशि विद्युत्प्रभ-गजदन्त-पर्वतस्थित सिद्धकूट जिनमंदिर संबंधि जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू के वायव्य दिशा में, गन्धमादनाचल गजदन्त।
स्वर्ण वर्णमय इस पर्वत पर, कूट कहें हैं सप्त विमल।।
मेरु निकट श्रीसिद्धकूट, के जिनमंदिर को नमन करूँ।
जल चंदन अक्षत आदिक ले, अर्घ्य चढ़ाकर यजन करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं मेरुपर्वतस्य वायव्यदिशि गंधमादन-गजदन्त-पर्वतस्थित सिद्धकूट जिनमंदिर संबंधि सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-दोहा-

गजदन्ताचल चार के, चार जिनालय जान।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, होवे भव दुःख हान।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ चतुर्गजदंताचलसंबंधि चतुर्जिनालयस्थित सर्वजिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षारपर्वत संबंधी 16 अर्घ्य

-कुसुमलता छंद-

सीतानदि के उत्तर तट पर, भद्रसाल वेदी के पास।
चित्रकूट वक्षार शैल हैं, स्वर्ण वर्णमय रहित विनाश।।
उस पर चार कूट हैं नदि के, सन्निध सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ विदेहक्षेत्र संबंधि सीतानद्या उत्तरतटे भद्रसाल-वनवेदिकापार्श्वे चित्रकूटवक्षारशैलसंबंधि सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदी के उत्तर तटपर, क्रम से पद्मकूट वक्षार।
स्वर्णवर्णमय शाश्वत उत्तम, कूट कहें हैं उन पर चार।।
सीतानदि के निकट विराजें, शाश्वत सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ विदेहक्षेत्र संबंधि सीतानद्या उत्तरतटे क्रमात् पद्मकूटवक्षारशैलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदी के उत्तर तटपर, क्रम से नलिनकूट वक्षार।
स्वर्णवर्णमय शाश्वत उत्तम कूट, कहें हैं उनपर चार।।
सीतानदि के निकट विराजें, शाश्वत सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ विदेहक्षेत्र संबंधि सीतानद्या उत्तरतटे क्रमात् नलिनकूटवक्षारशैलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदी के उत्तर तटपर, क्रम से एक शैल वक्षार।
स्वर्णवर्णमय शाश्वत उत्तम, कूट कहें हैं उन पर चार।।
सीतानदि के निकट विराजें, शाश्वत सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपूर्वविदेहक्षेत्र संबंधि सीतानद्या उत्तरतटे क्रमात् एकशैल वक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

सीतानदी के दक्षिण तटपर, देवारण्य वेदिका पास।
है वक्षार त्रिकूट नामका, स्वर्णवर्णमय रहित विनाश।।
उस पर चार कूट हैं नदि के, सन्निध सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या दक्षिणतटे देवारण्यवनसमीपे त्रिकूटवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदी के दक्षिण तटपर, है वैश्रवण नाम वक्षार।
स्वर्णवर्णमय शाश्वत उत्तम कूट, कहें हैं उन पर चार।।
सीतानदि के निकट विराजें, शाश्वत सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या दक्षिणतटे क्रमात् वैश्रवणवक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट चैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदी के दक्षिण तटपर, अंजनात्मा है वक्षार।
स्वर्णवर्णमय शाश्वत उत्तम, कूट कहें हैं उस पर चार।।
सीतानदि के निकट विराजें, शाश्वत सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या दक्षिणतटे क्रमात् अञ्जनात्मा वक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदी के दक्षिण तटपर, क्रम से है अंजन वक्षार।
स्वर्णवर्णमय शाश्वत उत्तम, कूट कहें हैं उस पर चार।।
सीतानदि के निकट विराजें, शाश्वत सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या दक्षिणतटे क्रमात् अंजनवक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तटपर, भद्रसाल वेदी के पास।
पर्वत श्रद्धावान स्वर्णमय, शुभ वक्षार सदा सुखराश।।
उस पर चार कूट हैं नदि के, सन्निध सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे क्रमात् भद्रसालवनवेदीपार्श्वेश्रद्धावान्वक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूटचैत्यालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, क्रम से विजयवान वक्षार।
स्वर्णवर्णमय शाश्वत उत्तम, कूट कहें हैं उस पर चार।।
सीतोदा के निकट विराजें, शाश्वत सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे क्रमात् विजयवान् वक्षारशैलस्थित सिद्धकूटजिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, क्रम से आशीविष वक्षार।
स्वर्णवर्णमय शाश्वत उत्तम, कूट कहें हैं उस पर चार।।
सीतोदा के निकट विराजें, शाश्वत सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे क्रमात् आशीविषवक्षारशैलस्थित सिद्धकूट जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, कहा सुखावह शुभ वक्षार।
स्वर्णवर्णमय शाश्वत उत्तम, कूट कहें हैं उस पर चार।।
सीतोदा के निकट विराजें, शाश्वत सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।12।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेहसंबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे क्रमात् सुखावहवक्षारशैलस्थित सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, देवारण्य वेदिका पास।
स्वर्ण वर्णमय चंद्रमाल है, शुभ वक्षार महासुखराश।।
उन पर चार कूट हैं नदि के, सन्निध सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।13।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेहसंबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे देवारण्यवेदिका-पार्श्वे चन्द्रमाल वक्षारशैलस्थ सिद्धकूटजिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, क्रम से सूर्यमाल वक्षार।
स्वर्णवर्णमय शाश्वत उत्तम, कूट कहें हैं उस पर चार।।
सीतोदा के निकट विराजें, शाश्वत सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।14।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेहसंबंधि सीतोदानद्या उत्तरतटे क्रमात् सूर्यमालवक्षारशैलस्थित सिद्धकूट जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, क्रम से नागमाल वक्षार।
स्वर्णवर्णमय शाश्वत उत्तम, कूट कहें हैं उस पर चार।।
सीतोदा के निकट विराजें, शाश्वत सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।15।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या उत्तरतटे क्रमात् नागमालवक्षारशैलस्थित सिद्धकूट जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, क्रम से देवमाल वक्षार।
स्वर्णवर्णमय शाश्वत उत्तम, कूट कहें हैं उस पर चार।।
सीतोदा के निकट विराजें, शाश्वत सिद्धकूट मंदिर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या उत्तरतटे क्रमात् देवमालवक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

सोलह गिरि वक्षार ये, कहे विदेहनि बीच।
उन पर सोलह जिनभवन, उनको अर्चूं नित्य।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ षोडश वक्षारपर्वत संबंधी षोडशजिनालयस्थ सर्वजिन बिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयार्ध पर्वतों के 34 अर्घ्य

–कुसुमलता छंद–

भरतक्षेत्र के मध्य सुशोभित, गिरि विजियार्ध रजतमय खास।
इस से औ गंगा सिंधु से, हो जाते षट् खंड विभाग।।
गुफाद्वार त्रय कटनी कूटों, सिद्धकूट से हैं सुन्दर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ भरतक्षेत्रसंबंधि विजयार्धपर्वतस्थ सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐरावत के मध्य सुशोभित, गिरि विजयार्ध रजतमय खास।
इससे रक्ता रक्तोदा से, हो जाते षट्खंड विभाग।।
गुफाद्वार त्रय कटनी कूटों, सिद्धकूट से हैं सुन्दर।
जलगंधाक्षत प्रभृति अर्घ्य ले, पूज रचाऊँ मन शुचिकर।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ ऐरावतसंबंधि विजयार्धपर्वतस्थ सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के उत्तरतट पर, भद्रसाल वेदी के पास।
कच्छा देश कहा विदेह का, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि विजयार्धपर्वतस्थ सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के उत्तरतट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश सुकच्छा शोभें, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या उत्तरतटे क्रमात् सुकच्छा-देश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्थ सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के उत्तरतट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश महाकच्छा शुभ, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या उत्तरतटे क्रमात् महाकच्छादेश-मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के उत्तरतट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश कच्छकावति है, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या उत्तरतटे क्रमात् कच्छकावतिदेश-मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के उत्तरतट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश कहा आवर्ता, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या उत्तरतटे क्रमात् आवर्ता देश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के उत्तरतट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
देश लांगलावर्ता शोभें, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या उत्तरतटे क्रमात् लांगलावर्ता देश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के उत्तरतट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
देश पुष्कला क्रम से शोभें, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या उत्तरतटे क्रमात् पुष्कला-देश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के उत्तरतट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश पुष्कलावति है, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या उत्तरतटे क्रमात् पुष्कलावति-देश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के दक्षिण तट पर, देवारण्य वेदिका पास।
वत्सादेश कहा विदेह का, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या दक्षिणतटे देवारण्य-वेदिका पार्श्वस्थवत्सादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के दक्षिण तट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
क्रम से सुवत्सा शोभें, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।12।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या दक्षिणतटे क्रमात् सुवत्सादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के दक्षिण तट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश महावत्सा है, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।13।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या दक्षिणतटे क्रमात् महावत्सादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के दक्षिण तट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश वत्सकावति है, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।14।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या दक्षिणतटे क्रमात् वत्सकावतिदेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के दक्षिण तट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
रम्या देश सुशोभित उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।15।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या दक्षिणतटे क्रमात् रम्यादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के दक्षिण तट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
देश सुरम्यक क्रम से शोभें, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या दक्षिणतटे क्रमात् सुरम्यकादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के दक्षिण तट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
रमणीया है देश सुशोभित, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।17।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या दक्षिणतटे क्रमात् रमणीयादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के दक्षिण तट पर, पूर्व विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश मंगलावति है, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।18।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पूर्वविदेह संबंधि सीतानद्या दक्षिणतटे क्रमात् मंगलावतिदेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा नदि के दक्षिण तट, भद्रसाल वेदी के पास।
पद्मादेश कहा विदेह का, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।19।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे भद्रसाल वन वेदिका पार्श्वे पद्मादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश सुपद्मा शोभें, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे क्रमात् सुपद्मादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश महापद्मा है, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।21।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे क्रमात् महापद्मादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश पद्मकावति है, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।22।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे क्रमात् पद्मकावतिदेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से शंखा देश सुशोभित, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।23।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे क्रमात् शंखादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से नलिनीदेश सुशोभित, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।24।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे क्रमात् नलिनीदेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से कुमुददेश है शोभित, उस पर हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।25।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे क्रमात् कुमुददेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से सरितदेश है शोभित, उस पर हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।26।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या दक्षिणतटे क्रमात् सरितदेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
वप्रादेश कहा विदेह का, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।27।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या उत्तरतटे देवारण्य वेदिका पार्श्वे वप्रादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश सुवप्रा शोभे, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।28।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या उत्तरतटे सुवप्रादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश महावप्रा है, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।29।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या उत्तरतटे महावप्रादेश-मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश वप्रकावति है, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।30।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या उत्तरतटे वप्रकावतिदेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से गंधादेश सुशोभित, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।31।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या उत्तरतटे गंधादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश सुगंधा शोभित, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।32।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या उत्तरतटे सुगंधादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
क्रम से देश गंधिला शोभित, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।33।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या उत्तरतटे गंधिलादेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, अपर विदेह कहा जिनराज।
गंधमालिनी देश सुशोभित, उसमें हैं षट्खंड विभाग।।
मध्य विराजे त्रयकटनी औ, नवकूटों युत विजयारध।
उस पर सिद्धकूट मंदिर को, अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सतत।।34।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ पश्चिमविदेह संबंधि सीतोदानद्या उत्तरतटे गंधमालिनीदेश मध्ये स्थितविजयार्धपर्वतस्य सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

भरतैरावत क्षेत्र के, दो विजयारध नित्य।
बत्तिस देश विदेह के, विजयारध बत्तीस।।
इन चौंतीस विजयार्ध के, जिनमंदिर चौंतीस।
उनमें प्रतिमा सब जजूँ, अर्घ्य चढ़ा धर प्रीति।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थचतुस्त्रिंशत्-विजयार्धपर्वत संबंधी चतुस्त्रिंशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बू-शाल्मलि वृक्ष के दो अर्घ्य

उत्तर कुरू में मेरु के ईशान कोण जम्बूतरू है।
उसकी उत्तर शाखा पर जिनमंदिर सुन्दर शाश्वत है।।
जल चंदन अक्षत आदिक ले अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति से।
अकृत्रिम जिनबिंब मनोहर उनको पूजूँ नितरुचि से।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ उत्तरकुरू भोगभूमि मेरुपर्वतस्य ईशानकोण मध्ये स्थित वृक्ष संबंधी जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवकुरू में मेरु के नैऋत्य कोण शाल्मलि तरु है।
उसकी दक्षिण शाखा पर जिनमंदिर सुन्दर शाश्वत है।।
जल चंदन अक्षत आदिक ले अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति से।
अकृत्रिम जिनबिंब मनोहर उनको पूजूँ नितरुचि से।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ देवकुरू भोगभूमि मेरुपर्वतस्य नैऋत्यकोण मध्ये स्थित शाल्मलि वृक्ष संबंधी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

जम्बूतरु शाल्मलितरू, इनके दो जिनगेह।
उनमें प्रतिमा को जजूँ, त्रिकरण शुद्धि समेत।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ जम्बूशाल्मलिद्वय वृक्षसंबंधी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद–

मेरु कुलाचल गजदन्ताचल गिरि वक्षार रजत पर्वत।
जंबू शाल्मलि तरु इन सबके हैं अट्ठत्तर जिनगृह नित्य।।
इक-इक जिनगृह में जिन प्रतिमा इक सौ आठ प्रमाण कहीं।
सब गृह में अठसहस चारशत चौबिस प्रतिमा जजूँ सही।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्ततिजिनालयस्थ चतुर्विंशत्यधिकाष्टसहस्र-चतुःशतक जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत नदी कूट सरवर में कमलगृहों के कुण्डों में।
वेदी उपवन अरु गोपुर तोरण द्वारों के शिखरों में।।
अकृत्रिम जिन प्रतिमा अगणित कही आर्ष में रत्नों की।
उन सबको नित अर्घ्य चढ़ाकर वंदन पूजन करूँ अभी।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपर्वतनदीकूटसरोवरकमलगृहकुण्डवेदीवनखण्ड-गोपुरद्वारेषु स्थितागणितजिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार तोरणद्वार के और अनावृतयक्ष के जिनमंदिर के अर्घ्य

–नरेन्द्र छन्द–

जम्बूद्वीप के परकोटे में विजयद्वार है पूरब दिक्।
विजयदेव उस पर रहता निज नगर बसा परिवार सहित।।
उसके गृह में जिनमंदिर हैं जिन प्रतिमा को नमन करूँ।
जल चंदन अक्षत आदिक ले अर्घ्य चढ़ाकर पूज करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ जगत्यां पूर्वदिक् संबंधि विजयद्वारस्थ विजयदेवस्य नगर स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप की जगती में वैजयन्त द्वार है दक्षिण दिक्।
उस पर वैजयंत सुर है निज नगर बसा परिवार सहित।।
उसके गृह में जिनमंदिर हैं जिन प्रतिमा को नमन करूँ।
जल चंदन अक्षत आदिक ले अर्घ्य चढ़ाकर पूज करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ जगत्यां दक्षिणदिक् संबंधि वैजयन्तद्वारस्थ वैजयन्तदेवनगर स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप के परकोटे में द्वार जयंत सुपश्चिम दिक्।
देव जयंत रहे उस पर निज नगर बसा परिवार सहित।।
उसके गृह में जिनमंदिर हैं जिन प्रतिमा को नमन करूँ।
जल चंदन अक्षत आदिक ले अर्घ्य चढ़ाकर पूज करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ जगत्यां पश्चिमदिक् संबंधि जयंतद्वारस्थ जयन्तदेवनगर स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप की जगती में अपराजित द्वार सुउत्तर दिक्।
देव रहे अपराजित उस पर नगर बसा परिवार सहित।।
उसके गृह में जिनमंदिर हैं जिन प्रतिमा को नमन करूँ।
जल चंदन अक्षत आदिक ले अर्घ्य चढ़ाकर पूज करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ जगत्यां उत्तरदिक् संबंधि अपराजितद्वारस्थापराजित-देवस्य नगर स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप सुरक्षक व्यन्तरदेव अनावृत यक्ष कहा।
निज परिवार सहित पूरबदिक् में रहता है मुदित महा।।
उसके गृह में जिनमंदिर हैं जिन प्रतिमा को नमन करूँ।
जल चंदन अक्षत आदिक ले अर्घ्य चढ़ाकर पूज करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ रक्षकयक्षव्यन्तरदेवस्य गृहे स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्य द्वीप के जिनालयों को अर्घ्य

–नरेन्द्र छन्द–

ढाईद्वीप में पाँच मेरु हैं उसमें अस्सी जिनमंदिर।
सबमें इकसौअठ जिनप्रतिमा अर्घ्य चढ़ाऊँ मन शुचिकर।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबधि अशीति जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरवर द्वीप आठवाँ बावन श्री जिनभवन कहे।
उनमें रत्नमयी जिन प्रतिमा अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति से।।2।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्थ द्वापञ्चाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यलोक के चार शतक औ अट्ठावन शाश्वत मंदिर।
उनमें राजित सब प्रतिमा को पूजूँ भाव भक्ति शुचिकर।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक संबंधि चतुःशतकाष्टपञ्चाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ कोटि छप्पन सुलाख और सहस सत्यानवे चार शतक।
इक्यासी जिनगेह अकृत्रिम ज्योतिष व्यंतर के अगणित।।
त्रिभुवन के सब जिनभवनों को पूजूँ नितप्रति भक्ति से।
जल चंदन अक्षत आदिक ले अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टकोटिषट्पञ्चाशत्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनभवनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवसौ पचीस कोटि त्रेपनलाख सताइस सहस प्रमाण।
नवसौ अड़तालिस जिनप्रतिमा नितप्रति अर्चूं करूँप्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंधि नवशतपंचविंशतिकोटि त्रिपंचाशत्लक्षसप्तविंशति-सहस्रनवशतकाष्टचत्वारिंशत् जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतर ज्योतिष के जिनगृह में अगणित जिनप्रतिमा मनहर।
जल चंदन अक्षत आदिक ले अर्घ्य चढ़ाऊँ मन शुचिकर।।6।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि व्यन्तरज्योतिष्कसुरालयस्थ अगणितजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप में ढाई द्वीप में मनुज शिल्पि निर्मित सुन्दर।
कृत्रिम जिनमंदिर जितने हैं अर्घ्य चढ़ाऊँ नित रूचिधर।।7।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थमनुष्यचक्रवर्त्यादिशिल्पि-विनिर्मित अगणित-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरतैरावत औ विदेह के तीर्थंकर जो त्रैकालिक।
उन सबको मैं अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ वंदन करूँ सतत।।8।।

ॐ ह्रीं भरतैरावतविदेहक्षेत्रस्थत्रैकालिकसर्वतीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्यमंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थ सर्वजिन-बिम्बेभ्यो नमः।

(108 सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले तंदुलों से)

जयमाला

दोहा– **जितने जम्बूद्वीप के, कृत अकृत जिनगेह।**
जितने तीर्थंकर हुये, नमूँ उन्हें धर नेह।।

–नरेन्द्र छंद–

मध्यलोक में द्वीप समुद्रों की गणना है संख्यातीत।
सबके मध्य विराजे जम्बूद्वीप सुदर्शन मेरु सहित।।
एक लाख योजन विस्तृत है परकोटे से घिरा हुआ।
विजय और विजयन्त जयन्त अपराजित चउ द्वार महा।।1।।

भरत हैमवत हरि विदेह रम्यक हैरण्यवतैरावत।
सात क्षेत्र हैं सुन्दर उनके छह कुल पर्वत किये विभाग।।
हिमवन् महाहिमवन् निषधाचल नील रुक्मि शिखरी पर्वत।
हेम रजत तपनीय नीलमणि रजत स्वर्णमय क्रम से नित्त।।2।।

पार्श्वभाग में रत्न खचित हैं ऊपर नीचे तुल्य कहे।
कूट सरोवर जिनभवनों युत अकृत्रिम अनुपम शोभे।।
पद्म महापद्म द्रह तिगिंच्छ केशरि महापुण्डरीक पुण्डरीक।
इन छह द्रह में कमलों ऊपर भवन बने हैं अनुपम नित्य।।3।।

उनमें क्रम से श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी देवी।
निज परिवार सहित रहती हैं जिन जननी सेवा करतीं।।
भरत क्षेत्र इक लाख के इक सौ नब्बेवां है भाग प्रमाण।
पुनः शैल औ क्षेत्र विदेह-क्षेत्र तक द्विगुण-द्विगुण परिमाण।।4।।

उससे आगे आधे-आधे हुये शैल औ क्षेत्र सभी।
दक्षिण दिक् में भरत क्षेत्र हैं ऐरावत है उत्तर दिक्।।
भरत और ऐरावत के हैं बीच रजत पर्वत लम्बे।
विद्याधर श्रेणी औ कूट जिनालय गुफा द्वार युत ये।।5।।

गंगा सिंधु रोहित रोहि-तास्या हरित् हरिकांता।
सीता सीतोदा नारी नरकांता स्वर्ण रूप्यकूला।।
रक्ता रक्तोदा ये चौदह नदियाँ निकली छह द्रह से।
सात क्षेत्र में बहती दो-दो शोभें तट वेदी वन से।।6।।

भरत क्षेत्र में विजयारध औ गंगा सिंधु नदियों से।
छह खंड हुये बीच का आर्यखंड औ पाँच म्लेच्छ खंड हैं।।
आर्यखंड के मध्य अयोध्या यत्र तत्र सब देश कहे।
इसी आर्यखंड में हम सब ऐरावत भी ऐसा है।।7।।

जम्बूद्वीप के मध्य विदेह क्षेत्र बिच मेरु सुदर्शन है।
एक लाख अरु चालिस योजन ऊँचा अकृत अनुपम है।।

भूपर चौड़ा दस हजार अरु अग्रशिखर पर योजन चार।
भद्रसाल नन्दन सौमनसं पांडुकवन ये शोभे चार।।8।।

इनमें चउदिश कहे जिनालय चारों वन के सोलह हैं।
पांडुकवन की विदिशाओं में पांडुक शिला आदि चउ हैं।।
इन पर तीर्थंकरों का अभिषव करते इन्द्र देव मिलकर।
महामेरु को नित्य नमूँ मैं मनवचतन से अञ्जलि कर।।9।।

सुमेरुपर्वत की चारों विदिशा में चार शैल गजदंत।
हस्तीदन्त सदृश ये लम्बे इन पर चार जिनालय नित्य।।
मेरु के दक्षिण उत्तर दिक् देवकुरू उत्तरकुरु है।
उत्तरकुरु में जम्बू तरु है देव कुरू में शाल्मलि है।।10।।

मेरू के पूरब-पश्चिम में पूर्व-अपर है कहें विदेह।
उनमें गिरि वक्षार विभंगा नदि के कीने बत्तीस भेद।।
सोलह हैं वक्षार शैल अरु नदी विभंगा बारह हैं।
वक्षारों के सोलह जिनगृह उनको नितप्रति बन्दूँ मैं।।11।।

इन विदेह में इक विजयारध गंगा-सिंधु नदी दो हैं।
अतः हुये छह खंड भरतवत् बत्तिस आर्य भूमि सोहैं।।
बत्तिस देश विदेहों के बत्तिस विजयारध पर्वत हैं।
उन पर एक एक जिनमंदिर बत्तिस मंदिर वन्दू मैं।।12।।

जम्बूद्वीप में इक सौ ग्यारह पर्वत कहे जिनागम में।
सत्तरह सौ ब्यानवे सहस नब्बे नदियाँ सब शाश्वत हैं।।
भोगभूमि षट्, कर्मभूमि चौंतिस, चौंतिस हैं आरजखण्ड।
इक सौ सत्तर म्लेच्छ खंड हैं जम्बू शाल्मलि भूमय वृक्ष।।13।।

जितने पर्वत नदी सरोवर, कुण्ड, कूट, जिनमंदिर हैं।
सबके चउदिश तट वेदी है सब के चउदिश उपवन हैं।।
तोरण द्वार मनोहर सबमें अकृत्रिम सब रचना है।
सब में रत्नमयी जिनप्रतिमा सुरनर मुनिगण वन्दित हैं।।14।।

मेरु सुदर्शन के षोडश जिनगृह गजदंत गिरी के चार।
कुलगिरि के षट् कहे विदेह क्षेत्र के षोडश गिरि वक्षार।।
रजताचल के चौंतिस जिनगृह जम्बू शाल्मलि के दो जान।
ये सब अट्ठत्तर चैत्यालय उनको नमूँ सदा सुखदान।।15।।

इक-इक गृह में इकसौ आठ हैं जिनवर प्रतिमा शोभें नित्य।
अट्ठत्तर जिनगृह में प्रतिमा आठ सहस चउशत चौबीस।।
ये सब पाँच शतक धनुऊँची पद्मासन राजें सुन्दर।
भव्यजनों को अतिशय प्रिय हैं वीतराग छवि दृग मनहर।।16।।

मुनिगण वंदित पाद सरोरुह सुरपति नागनरेन्द्र नुतं।
त्रिभुवन जिनगृह शाश्वत जितने मनःशुद्धि हेतू पूजन।।
मंगल द्रव्य विविध तोरण घट धूप कुम्भ मंगल शोभें।
मणिमाला से अनुपम जिनगृह मनःशुद्धि से प्रणमूं मैं।।17।।

भरतैरावत के चौबिस तीर्थंकर तथा विदेहों के।
विहरमाण सीमन्धर आदिक उनको नमूँ सदा रुचि से।।
आर्यखंड के कृत्रिम जिनगृह मनुज शिल्पि निर्मित अगणित।
पंचकल्याणक भूमि तथा अतिशय तीर्थों को नमूँ सतत।।18।।

जय जय अकृत्रिम जिनमंदिर! तीनलोक संपद् भर्ता।
जय जय परमात्मन्! परमेष्ठिन्! तीनलोक चूड़ामणि नाथ।।
जय जय जिन प्रतिमा की जय हो सकल दोष विच्छेद करो।
रागमोह युत मम अज्ञानवान् मन झटिति पवित्र करो।।19।।

जय जय श्री जिनवर, पाप ताप हर, सुख संपत कर नमन करूँ।
जिन प्रतिमा ध्याऊँ, पाप नशाऊँ, फेर न भव में भ्रमण करूँ।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थाष्टसप्तति जिनालयस्थअकृत्रिमजिनप्रतिमाभ्यः कृत्रिमजिनप्रतिमाभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भवि जम्बूद्वीप के, तीर्थंकर औ तीर्थ।
सब जिनगृह पूजें सतत, 'ज्ञानमती' हो नित्य।।

।। इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

शांति-कुंथु-अरनाथ को, नमन करूँ शत बार।
जम्बूद्वीप विधान की, रचना पहली बार।।1।।

सदी बीसवीं के प्रथम, शांतिसागराचार्य।
उनके पट्टाधीश गुरु, वीरसागराचार्य।।2।।

गुरुद्वय के पदकमल में, मम नमोस्तु त्रयबार।
गुरुभक्ति सब कार्य में, एक मूल आधार।।3।।

वीर संवत् चौबिस सौ, निन्यानवे का वर्ष।
शुक्ला दूज अषाढ़ की, मन में था अति हर्ष।।4।।

हस्तिनागपुर तीर्थ पर, था संक्षिप्त प्रवास।
पूर्ण किया उस तीर्थ पर, जम्बूद्वीप विधान।।5।।

इस लघुकाय विधान का, अतिशय दिखा तुरन्त।
जम्बूद्वीप की भूमि का, निर्णय हुआ तुरंत।।6।।

जयमाला की पंक्तियाँ, ज्यों ही लिखी विचार।
मोतीचंद ब्रह्मचारि ने, दिया सुखद समाचार।।7।।

भूमि का क्रय हो गया, बनेगा जम्बूद्वीप।
जैनधर्म भूगोल में, कहा प्रथम यह द्वीप।।8।।

तीर्थ हस्तिनापुर नमूँ, महातीर्थ शुभधाम।
त्रय पदयुत त्रय तीर्थंकर, चार-चार कल्याण।।9।।

जब तक भी इस तीर्थ का रहे, जगत में नाम।
जम्बूद्वीप विधान यह, भरे सभी में ज्ञान।।10।।

भगवन्! मुझको शक्ति दो, शीघ्र करूँ मैं दर्श।
जम्बूद्वीप की वंदना, करके हो मन हर्ष।।11।।

अर्हज्ज्ञानमती श्री का, परम्परा से लाभ।
यही याचना एक है, तव चरणों में नाथ!।।12।।

।। इति शं भूयात् ।।

जम्बूद्वीप की मंगल आरती

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

ॐ जय जम्बूद्वीप जिनं, स्वामी जय जम्बूद्वीप जिनं।
इसके बीचोंबीच सुशोभित, स्वर्णाचल अनुपम।।ॐ जय.।।

जम्बूद्रुम से सार्थक, जम्बूद्वीप कहा।।स्वामी..।।
मणिमय नग चैत्यालय-2, से युत शोभ रहा।।ॐ जय.।।

मेरु सुदर्शन पूर्व अपर में, बत्तिस हैं नगरी।।स्वामी.।।
तीर्थंकर की सतत जहाँ पर-2 दिव्यध्वनि खिरती।।ॐ जय.।।

सिद्धकूट अरु सुरगृह में भी, जिन प्रतिमा शाश्वत।।स्वामी.।।
ऋद्धि सहित ऋषि वन्दन करके-2 पीते परमामृत।।ॐ जय.।।

सर्व केवली तीर्थंकर अरु, परमेष्ठी होते।।स्वामी.।।
इस ही भू पर जन्मे-2 अरु शिव भी पहुँचे।।ॐ जय.।।

इसी हेतु यह द्वीप जगत में, पावन पूज्य कहा।।स्वामी.।।
तीर्थंकर जन्माभिषेक भी-2 करते इन्द्र जहाँ।।ॐ जय.।।

हस्तिनागपुर में यह रचना, वैभवपूर्ण बनी।।स्वामी.।।
ज्ञानमती की अमरकृती यह-2 सुन्दर सौख्य घनी।।ॐ जय.।।

अठसत्तर जिनगेह अकृत्रिम, अतिशय युत शोभें।।स्वामी.।।
लहें ''चंदना'' क्रम से शिवपुर-2 जो जिनवर पूजें।।ॐ जय.।।

भजन

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-रोम रोम से.....।

जनम जनम में पाऊँ जिनवर दर्श तुम्हारा-हाँ दर्श तुम्हारा।
जम्बूद्वीप की रचना सा ना देखा कहीं नजारा।।जनम.....

देखो तो स्वर्णाचल मेरु कैसी छवि दरशाता।
सूर्य चन्द्र की किरणों से प्राकृतिक न्हवन करवाता।।
गंगा सिंधू नदियों की बहती है निर्मल धारा।। जनम.....।।1।

अपनी सुन्दरता के कारण जम्बूद्वीप प्रसिद्ध हुआ।
श्वेत कमल का मंदिर अतिशय चमत्कारमय सिद्ध हुआ।।
खिली हुई पंखुडियों से यह मंदिर जग में न्यारा।। जनम.....।।2।।

ध्यान का मंदिर हर दर्शक का मन आकर्षित करता है।
पास में जाकर कुछ क्षण ध्यान लगाने का मन करता है।।
ध्यान में खोकर देखो मिलता ज्ञान का रूप निराला।। जनम....।।3।।

गणिनी ज्ञानमती माता की ये अनमोल धरोहर हैं।
इसी एक शिल्पी की ये ''चन्दनामती'' कृति सुन्दर हैं।
इतिहासों में युग-युग तक चमकेगा भाग्य सितारा।। जनम.....।।4।।

जम्बूद्वीप चालीसा

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

–दोहा–

वंदूँ सोलह जिनभवन, गिरि सुमेरु के सिद्ध।
अट्ठत्तर जिनबिम्बयुत, जम्बूद्वीप प्रसिद्ध।।1।।

आचार्यों के वचन को, किया जहाँ साकार।
हस्तिनागपुर में करो, चालीसा सुखकार।।2।।

गणिनी आर्यिका ज्ञानमती, ज्ञान गुणों की खान।
जिनके शुभ आशीष से, निर्मित द्वीप महान।।3।।

शांति कुंथु अरनाथ का, कर वंदन शत बार।
चालीसा चालीस दिन, कर भवि हों भवपार।।4।।

–चौपाई–

जम्बूद्वीप महान कहाता, उमास्वामि के वचन सुनाता।
मोक्षशास्त्र की है यह कथनी, मध्यलोक जो सबकी जननी।।5।।

दोय सहस वर्षों की घटना, है यतिवृषभ ऋषी का कहना।
है तिलोयपण्णत्ति पुराणा, जिसमें मुनिवर करें बखाना।।6।।

तीन लोक का वर्णन सारा, इनसे जाने सब संसारा।
अधो ऊर्ध्व में नरक स्वर्ग हैं, मध्यलोक में द्वीप जलधि हैं।।7।।

द्वीप समुद्र असंख्य कहाए, मध्यलोक की महिमा गाएँ।
उनमें जम्बूद्वीप प्रधाना, जिसको जाने सकल जहाना।।8।।

उन्निस सौ पैंसठ की घटना, कर्नाटक में सच्चा सपना।
श्रवणबेलगुल विंध्यगिरी पर, बाहुबली के चरण निधी पर।।9।।

ज्ञानमती ने किया निवासा, संघ आर्यिका सहित प्रवासा।
चातुर्मास वहीं पर कीना, हुआ तभी इक कार्य नवीना।।10।।

एक दिवस ध्यानस्थ मात ने, किया दर्श मंगल प्रभात में।
जम्बूद्वीप अकृत्रिम रचना, नग चैत्यालय मणियों से बना।।11।।

बीचों बीच सुमेरु बखाना, स्वयंभुवा प्रतिमा युत माना।
गंगासिंधु नदी बहती हैं, प्रभु के मस्तक पर गिरती हैं।।12।।

माँ ने ध्यान विसर्जित कीना, अद्भुत आनंद अनुभव कीना।
विंध्यगिरी से नीचे आकर, देखा सब शास्त्रों को जाकर।।13।।

ज्यों का त्यों वर्णन जब पाया, समझीं बाहुबली की माया।
वीतराग का अतिशय भारी, वह प्रतिमा है जग में न्यारी।।14।।

ज्ञानमती का ज्ञान तभी से, हुआ विलक्षण उस क्षण ही से।
जम्बूद्वीप कहाँ निर्मित हो, यह विचार करती प्रमुदित हों।।15।।

पच्चिस सौ निर्वाण दिवस पर, दिल्ली में था सत समागम।
ज्ञानमती माताजी का संघ, पहुँचा जहाँ उपस्थित चउ संघ।।16।।

हस्तिनापुर की पुण्य धरा पर, जहं जन्मे थे शांति कुंथु अर।
तीनों तीर्थंकर औ चक्री, कामदेव त्रय पद के शक्री।।17।।

कोड़ा कोड़ी वर्ष पूर्व में, लिया जहाँ आहार प्रभू ने।
आदिवृषभ का अतिशय भारी, अक्षयतृतिया तिथि सुखकारी।।18।।

दान तीर्थ प्रारंभ जगत में, किया तभी श्रेयांस नृपति ने।
नृप ने स्वप्न सुमेरू देखा, किया अतिथि सत्कार समेता।।19।।

अनहोना संयोग जहाँ पर, बन गया उच्च सुमेरु वहाँ पर।
जम्बूद्वीप की सुंदर रचना, जिस मधि गिरि सुमेरु की गणना।।20।।

गोलाकार द्वीप कहलाता, लवणोदधि से शोभा पाता।
जल विहार करते नर नारी, जम्बूद्वीप देखें सुखकारी।।21।।

चारों तरफ मनोहर प्रतिमा, स्वयंसिद्ध अठसत्तर गणना।
सिद्धकूट जिनमंदिर माने, शेष देवभवनों के जाने।।22।।

अट्ठत्तर की गणना सुनिये, नतमस्तक हो प्रभु को नमिये।
स्वयं सिद्ध का वंदन कर लो, प्रभु श्रद्धा को मन में धर लो।।23।।

प्रथम सुदर्शन मेरु गिरी है, सोलह प्रतिमा सौख्य श्री हैं।
भद्रसाल नंदन सौमनसं, पांडुक वन सोहे गिरि शीसं।।24।।

चार वनों की चारों दिश में, चार-चार प्रतिमा उन सबमें।
इक सौ इक फुट ऊँचा सुन्दर, दर्शन की सुविधा जहाँ अंदर।।25।।

क्रम-क्रम से सीढ़ी चढ़ करके, पर्वत की चोटी पर पहुँचे।
क्या अतिशय है इस पर्वत में, किंचित् श्रम नहिं होता तन में।।26।।

मेरू की चारों विदिशा में, चार कहे गजदंत सु तामें।
तिनमें चार सिद्ध की प्रतिमा, अकृत्रिम की जानो महिमा।।27।।

जम्बू शाल्मलि वृक्ष सुशोभें, देवकुरू उत्तरकुरु में हैं।
उनमें भी अकृत्रिम प्रतिमा, जिनमंदिर शाश्वत सुख कर्मा।।28।।

पूर्व अपर बत्तिस विदेह में, सोलह गिरि वक्षार कहे हैं।
जिनमें एक-एक जिनमंदिर, जिनप्रतिमा को नमत पुरन्दर।।29।।

चौंतिस गिरि विजयार्ध नाम के, विद्याधर श्रेणी सुथान के।
बत्तिस गिरि बत्तिस विदेह के, दो भरतैरावत सुगेह के।।30।।

इन चौंतिस पर चौंतिस आलय, जिनवर प्रतिमा जजूँ सुखालय।
हिमवन आदि कहे षट् कुलगिरि, जिनमें रहतीं श्री आदिक सुरि।।31।।

मेरू के दक्षिण में त्रय हैं, उत्तर के त्रयमिल सब छह हैं।
उनमें स्वयंभुवा जिनमंदिर, अकृत्रिम जिनप्रतिमा सुन्दर।।32।।

हुई अठत्तर गणना सारी, जिनका वंदन जग सुखकारी।
इनसे जम्बूद्वीप सुशोभे, नग चैत्यालय युत मन मोहे।।33।।

इक सौ तेइस देवभवन हैं, जिनमें चैत्य सु मनभावन हैं।
समवसरण छह वहाँ विराजें, सौम्य छवी युत जिनवर राजें।।34।।

यही प्राकृतिक रचना सारी, बनी हस्तिनापुर में प्यारी।
वन उद्यान पुष्प फल युत है, विद्युत प्रभा आदि संयुत है।।35।।

गोमुख से गिरती धाराएँ, मानो प्रभु का न्हवन कराएँ।
गंगा सिंधु नदी बहती हैं, लवणोदधि में जा मिलती हैं।।36।।

सारे जग में एक अनोखी, रचना जम्बूद्वीप अनूठी।
पौराणिक संस्कृति दिग्दर्शक, विश्वशांति पथ करे प्रदर्शन।।37।।

आत्मशांति की इच्छा लेकर, दर्शन वंदन करते जो नर।
लौकिक संपत्ती लभते हैं, स्वयंसिद्धि वे ही वरते हैं।।38।।

कुरुजांगल शुभ देश का, चमत्कार चहुँओर।
फैला भारत देश में, ज्ञानज्योति का शोर।।39।।

सुदी छट्ठ आषाढ़ में, वीर गर्भकल्याण।
रचा ''चन्दनामती'' यह, चालीसा धरध्यान।।40।।

जम्बूद्वीप व्रत विधि

जम्बूद्वीप के सुदर्शमेरु के 16 जिनमंदिर, गजदंत के 4, जंबू शाल्मली वृक्ष के 2, सोलहवक्षार पर्वत के 16, चौंतीस विजयार्ध पर्वत के 34 और छह कुलाचल के 6 ऐसे 16+4+2+16+34+6=78 अठत्तर अकृत्रिम जिनमंदिर हैं। इनको लक्ष्य करके 78 उपवास करना उत्तम है, अल्पाहार करना मध्यम है और एक बार शुद्ध भोजन – एकाशन करना जघन्य व्रत है।

इस व्रत को तिथि से करने पर सुदर्शनमेरु के 16 प्रतिपदा के 16, दो वृक्ष के द्वितीया के 2, चार गजदंत के चतुर्थी के 4, षट् कुलाचल के षष्ठी के 6, सोलह वक्षार के 16 अष्टमी के 16, चौंतीस विजयार्ध के 34 चौदस के 34 इस प्रकार इन तिथियों में व्रत कर सकते हैं। यदि बिना तिथि के करना है तो अष्टमी, चतुर्दशी आदि तिथियों में व्रतों को करके 78 व्रत पूरे करने चाहिए। पुनः जंबूद्वीप विधान करके उद्यापन करे, शक्ति के अनुसार जिनप्रतिमा निर्माण कराकर जिनमंदिर बनवाकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, शास्त्रदान, 78-78 उपकरण दान आदि करके व्रत का उद्यापन पूर्ण करना चाहिए। व्रत के दिन जंबूद्वीप की पूजा करना चाहिए। यह पूजा इसी पुस्तक के प्रारंभ में छपी है।

प्रत्येक व्रत में समुच्चय जाप्य निम्न प्रकार है –

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिअष्टसप्ततिजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

जम्बूद्वीप जिनमंदिर के 78 व्रत के 78 पृथक्-पृथक् मंत्र –

सुदर्शन मेरु के 16 जिनमंदिर के 16 मंत्र –

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।

4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितउत्तरदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितउत्तरदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितउत्तरदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितउत्तरदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।

चार गजदंतपर्वत जिनमंदिर के 4 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-माल्यवद्गजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महासौमनसगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

दो वृक्षों के जिनमंदिर के 2 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-जंबूवृक्षस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शाल्मलिवृक्षस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

षट् कुलाचल जिनमंदिर के 6 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्थित-जिनालयाजिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्थित-जिनालयाजिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रूक्मिपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरिपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

सोलह वक्षार पर्वत जिनमंदिर के 16 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

9. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चन्द्रमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

34 विजयार्ध के 34 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।

9. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुरम्यकाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
17. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
18. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
19. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
20. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
21. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।

22. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नलिनाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
23. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कुमुदविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
24. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सरित्विदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
25. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
26. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
27. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
28. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
29. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
30. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
31. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
32. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
33. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नम
34. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।

।।समाप्तं।।